|| अर्हम् ||

# आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

**दूरभाष : 01565–224600,224900**

**ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com**

## तैजस शक्ति से निर्मित होता है आकर्षक आभामण्डल – आचार्य महाप्रज्ञ

**–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–**

श्रीडूँगरगढ़ 15 फरवरी : आभामण्डल एक पहचान है। जिस व्यक्ति का आभामण्डल शक्तिशाली होता है, उसके पास बैठने से मन को शांति मिलती है। जहां तीर्थंकर विहार करते है वहां से मीलों की दूरी तक न कोइ बीमारी होती है और न ही किसी प्रकार का उपद्रव होता है। उनके तैजस्वी आभामण्डल से निकलने वाले पवित्र परमाणु । इन परमाणुओं की वजह से व्यक्ति के भावों में परिवर्तन घटित होता है और वह आतंक एवं और हिंसक विचारों को छोड़ देता है।

उक्त विचार मानवता के मसीहा आचार्य महाप्रज्ञ ने कल्याण मंदिर स्त्रोत्र पर प्रवचन करते हुए उपरले तेरापंथ भवन में व्यक्त किये। उन्होने कहा कि व्यक्ति व्यक्ति के आकर्षण का बहुत अन्तर होता है। तैजस् शक्ति के कम होने से आकर्षण नहीं रहता और पास में बैठने का मन नहीं करता है। तैजस् शक्ति से आकर्षक आभामण्डल का निर्माण होता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि भगवान पार्श्व का रंग नीला था। नीला रंग बहुत शक्तिशाली होता है। जब रत्नजड़ित स्वर्णिम आसन पर बैठकर अर्हत् पार्श्व प्रवचन करते तो लोग अनिमेष निहारने लग जाते। उनकी वाणी में गांभीर्य था। जिस व्यक्ति की वाणी शक्ति केन्द्र से प्रकंपित करती हुई तैजस् केन्द्र को होते हुए कण्ठ से निकलती है वह प्रभावशाली होती है। आचार्यप्रवर ने कहा कि जब तक व्यक्ति का आभामण्डल होता है तब तक व्यक्ति श्वास रुक जाने के बाद भी जिंदा रहता है और आभामण्डल समाप्त होने पर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। आचार्य सिद्धसेन ने भगवान पार्श्व की स्तुति में कहा है कि प्रभु आपके नील वर्ण के आभामण्डल के प्रभाव से अशोक वृक्ष के लाल वर्णीय पत्ते भी नीले रंग के हो जाते हैं तो सराग व्यक्ति आपके सान्निध्य को पाकर वीतराग बन जाता है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

इससे पूर्व युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और उत्तराध्यन पर तुलनात्मक विवेचन करते हुए कहा कि लज्जा को धारण करने वाला, चित्त की चंचलता पर नियंत्रण रखने वाला, क्रोध न करने वाला, अलोलुप और मृदु भाषा का प्रयोग करने वाला दैवीय संपदा से युक्त होता है।

**अंकित सेठिया**

**मीडिया संयोजक/सहसंयोजक**